International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2349-4218)
Impact- Factor 5.414 Volume 5, Issue 3, March 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

चूरू जिले के भित्ति चित्रों के अवशेष :–हवेलियां एवं भवनोंके सन्दर्भ में

डॉ. नरेन्द्र कुमार
व्याख्याता, चित्रकला विभाग
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

भित्ति चित्रण में भित्ति (दीवार) को प्रमुख अंग माना गया है। जिसे चूने अथवा गारे के लेप्य से पत्थरों व ईंटों द्वारा चून कर तैयार किया जाता है। जिसे भारतीय वांगमय साहित्य में कुड्य (दीवार) की संज्ञा दी गई है। जिस पर सौन्दर्य एवं सृजन की दृष्टि से किया हुआ अलंकरण भावाभिव्यक्ति तथा अनुकरण भित्ति चित्रण कहलाता है।

भित्ति चित्रों के क्षेत्र में राजस्थान अत्यधिक समृद्ध रहा है यहाँ के शासकों ने कई आकर्षक महल राजप्रसाद, दुर्ग, मन्दिर बनवाये और उनकी साज सज्जा के लिये भित्ति चित्रों ने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। राजस्थान के आरम्भिक भित्ति चित्रों में अच्छी कलाकृतियाँ आमेर में आज भी देखी जा सकती हैं। आमेर में भित्ति चित्रों से मंडित छतरी में 1620 ईस्वी का लेख मिला है जिससे यह ज्ञात होता है कि यह छतरी तथा कथित भारमल की न होकर बल्कि राजा मानसिंह की है। तथा इसी क्रम में बैराठ, मोजमाबाद के भित्ति चित्र भी उल्लेखनीय रह हैं। वस्तुतः भित्ति अंकन की यह परम्परा समस्त राजस्थान में पल्लवित और विकसित हुई और व्यापक हो गई जिसे हम आज उत्कृष्ट रूप में ढूंढार,

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

हाडोती, मेवाड़, मारवाड़, चूरू तथा शेखावाटी आदि के क्षेत्रों में व्यापक व विपुल रूप से फेली हुई देख सकते हैं।3

चूरूजिले में भी लघु चित्रों की भाँति भित्ति अंकन की एक महत्वपूर्ण परम्परा रही है जिसमें चूरू, सरदार शहर, रतनगढ़, तारानगर, सुजानगढ़, रतन नगर, राजगढ़, डूंगरगढ़ आदि प्रमुख कला केन्द्र रहे हैं। यहाँ के शासकों एवं सेठ साहूकारों में वास्तुशिल्प निर्माण के प्रति गहरी अभिरुचि थी जिससे उन्होंने कई मुख्य तथा अनुपम गढ़, हवेलियाँ, मन्दिर, छतरियाँ, कुएं आदि का निर्माण कराया और उन्हें विभिन्न प्रकार के कलात्मक भित्ति चित्रों से सुसज्जित और अलंकृत करवाया जो उनकी कलात्मक अभिरुचि का परिचायक है। राजप्रसादों की यह भित्ति अंकन परम्परा राजस्थान में सर्वप्रथम हवेलियों, मन्दिरों, छतरियों तथा जनसामान्य के भवनों तक व्यापक एवं लोकप्रिय हुई। जिससे चूरू व इसके क्षेत्र की हर पुरानी गली में उस समय की कला साधना दिखाई पड़ती है। जहाँ एक ओर इसके मन्दिरों की मूर्तियाँ विभिन्न भंगिमाओं में नृत्य करती प्रतीत होती हैं वहीं दूसरी ओर चूरू के भवनों और हवेलियों की भित्तियों पर मूर्तिमान गणपति अनुग्रह लुटाते हैं और चित्रित नायिकाएं रागिनियाँ छेड़ती हैं।

प्राचीन समय में हवेलियों को प्रासाद व मन्दिर के अर्थ में भी प्रयोग किया गया है जहाँ पर मन्दिर व रहन–सहन दोनों की व्यवस्था होती थी। जिनके आकार विशालकाय होते थे। परम्परा व समयानुसार इनकी वास्तु व निर्माण में भी बदलाव चलता रहा है।

राजस्थान में 16वीं शताब्दी के पश्चात् राजप्रासादों के अतिरिक्त निजी भवन हवेलियों का व्यापक निर्माण हुआ जिसमें 17वीं शताब्दी केपश्चात् मरू प्रदेश के बीकानेर रियासत में चूरू तथा इसके आस–पास शेखावाटी आदि स्थलों पर इन हवेलियों का निर्बाध गति से निर्माण हुआ, जहाँ पर प्रथम बार राजपरिवार से भिन्न श्रेष्ठी वर्ग व जन सामान्य को राजप्रासादों जैसी विशालकाय हवेलियों आदि के निर्माण की स्वतन्त्रता मिली।

हवेलियों में भी जहां एक ओर मुगल साम्राज्य का आधिपत्य होने की वजह से इनके निर्माण व वास्तु शैली में ईरानी प्रभाव परिलक्षित होता इनके अतिरिक्त इन हवेलियों के मुख्य है। विशालकाय मेहराब दार दरवाजे व बाहुल्य रूप से खिड़कियाँ झरोखे व रोशनदान आदि का निर्माण किया गया। अंग साल, चौबारे, रसोई (रसवती) पेड़ा, बैठक, पेड़ी, दुछत्ती, सूफा, तिबारी, पोली, राबटी, बरामदा, छज्जा, गोरवा, जाली, झरोखा, मोरी, बारी, हटड़ी, नाल, गुमटियाँ (भूगृह) आदि हैं। चूरूकी हवेलियों के टोडे झुकवाना सम्पन्नता व शुभ लक्ष्मी का प्रतीक समझा जाता था।

राजप्रसादों की परम्परानुसार हवेलियों में भी पुरुषों व महिलाओं के लिये पृथक–पृथक कक्षों की व्यवस्था होती थी तथा दिन के वक्त पुरुष वर्ग घर पर नही रहा करते थे जिससे स्त्रियां अपने स्वतन्त्र रूप से कार्य आदि किया करती थी। बाकि समय पर्दे आदि की व्यवस्था रहती थी और हवेलियाका मुख्य द्वार बन्द रखा जाता था तथा इसी मुख्य द्वार में एक छोटा द्वार और होता था। मुख्य द्वार पर

पहरेदार आदि भी रहते थे। बाहर से आने वाले आगन्तुक व अतिथि जूते–चप्पल मुख्य द्वार पर खोलकर ही अन्दर प्रवेश करते थे। जिनके बाहर गैलरी व बरामदा तथा बहारी व्यक्तियों को देखने के लिये झरोखे आदि होते थे। आधुनिक सुख सुविधाओं का अभाव होते हुये भी यहाँ के चेजारे इन हवेलियों में ठण्डी हवा आने तथा बरसात व धूल आदि से बचाव का व्यापक प्रबन्ध करते थे।

मेहराबदार खिड़की दरवाजों के द्वार व चोखट सुन्दर नक्काशीदार लकड़ी के बने होते थे, जिन पर की गई कारीगरी के लिये चूरू अग्रणी है। हवेलियों के कमरों में सुन्दर गलीचे व चटाईयाँ आदि बिछी होती थीं। अंग्रेजी प्रभाव के पश्चात इन हवेलियों की आन्तरिक साज सज्जा में भी परिवर्तन आया जिसमें आधुनिक फर्नीचर, कांच की चौखट (फ्रेम) झाड़ फानूस, पेन्टिंगें आदि सजायी जाने लगीं जिससे अतिथि सत्कार एवं रहन–सहन व खान–पान आदि इनसे प्रभावित हुए।

राजपरिवार की हवेलियों में रात्रि के समय नाच गाने व महफिल जमाई जाती थीं जिसमें केवल राजपूत आदि व्यक्ति ही सम्मिलित होते थे। श्रेष्ठी वर्ग इन उत्सवों में भाग नहीं लेते थे। अतिथि सत्कार दान, मधुर व्यवहार चूरू के श्रेष्ठी वर्ग व जन सामान्य तक में आज भी कूट–कूट कर भरा हुआ है।

परम्परानुसार चूरू जिले की हवेलियों को निर्माण कौशल के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के नयनाभिराम भित्ति चित्रों व अलंकरणों से सुसज्जित किया गया है जो चूरू जिले की सभी तहसीलों में आज भी विद्यमान है जिनमें निम्न हेवलियाँ प्रमुख हैं –

हजारी मल सरदार मल कोठारी की हवेली

चूरू में स्थित यह दोहरी हवेली है जिसमें दो चौक हैं तीन मंजिली इस हवेली में ऊपर व नीचे दो बैठकें हैं। यह हवेली पूर्ण बन्द है केवल बाहरी हिस्सों पर भित्ति चित्र दिखाई देते हैं, यहाँ पर प्रायः धार्मिक चित्र एवं अलंकरण का ज्यादा प्रभाव है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति चित्रों की भी बाहुलताहै। यहाँ के प्रमुख चित्रों में लक्ष्मी एवं सफेद हाथी है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इस तरह का चित्र पूरे चूरू में यहीं है। इस चित्र में लक्ष्मी जी। कमला आसन पर विराजमान हैं और दोनों ओर दो–दो सफेद हाथी लक्ष्मीजी पर पानी एवं पूष्प डाल रहे हैं का चित्र चित्रण प्रमुख है एवं इसके आस–पास भी अनेक धार्मिक चित्र हैं जिनमें रामायण, रासलीला, धार्मिक, शिकार एवं जनजीवन के अनेक चित्र बने हुए हैं। शीशे के टूकड़ों की जड़ाई का कार्य भी बड़ी खुबी से किया गया है। 17 तकनीकी दृष्टि से यहाँ फ्रेस्को बूनो एवं सेको दोनों ही विधियाँ काम में ली गई है।

मोलक चन्द लोहिया की हवेली, चूरू

यहाँ के भित्ति चित्रों को देखने से यह आभास होता है कि यहाँ के भित्ति चित्रों का समय 19वीं शती का प्रारम्भ रहा होगा। यहाँ के चित्रों की विशेषता, शारीरिक अंगों की बनावट सुदृढ़ है एवं साज सज्जा तथा अलंकरणों का भी व्यापक चित्रण है। रंगों में गेरु एवं हरे का ही प्रयोग किया गया है। विषय मुख्य रूप से गीता महाभारत एवं अन्य कथाओं से सम्बन्धित हैं व व्यक्ति चित्रों का भी व्यापक

चित्रण हुआ है। इस हवेली में दो बार भित्ति चित्रण हुऐ हैं जिनमें प्रारम्भ की चित्रण पद्धति फ्रेस्को बूनो घुटाई वाली रही हैं बाकी बाद में सेको पद्धत्ति से भी चित्रण किया गया है। पूर्व के चित्र 18वीं शती के आस–पास के प्रतीत होते हैं। जिनमें ऊँट, घोड़े, हाथी, राधा–कृष्ण से सम्बन्धित चित्रण हुआ है।

मानमल खेमका की हवेली, चूरू

मंत्री मार्ग चूरू में बद्री प्रसाद मानमल खेमका की प्रसिद्ध दुमंजिली हवेली है। इस हवेली में भी अलंकरण एवं धार्मिक चित्रों का ही चित्रण है लेकिन सबसे प्रमुख विशेषता इस हवेली के मुख्य द्वार पर रागमाला चित्रित है यही इसकी प्रमुख विशेषता है।

ये सभी 36 रागिनियाँ अपने–अपने भावों में बड़े सुन्दर व मनोरम ढंग से चित्रित की गई है जिनके पृष्ठ भाग में हरे रंग को प्राथमिकता दी गई है और मुख्य रंगों में लाल, नीला, पीला रहा है। यहाँ के इन चित्रों में सभी रागें राधा और कृष्ण के साथ रागमय हो रही है।

सुराणा हवामहल, चूरू

वर्तमान समय में बाबूलाल सुराणा की यह तीन मंजिली हवेली सम्भवतः चूरू नगर की सबसे अधिक ऊँचाई की यही हवेली है। यहाँ से पूरे चूरू नगर का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। इस हवेली की मुख्य विशेषताओं में इसमें 1100 खिड़कियाँ एवं दरवाजे हैं जिनकी वजह से इसे सुराणा हवामहल कहा जाता है। इस विशालकाय हवेली में तीन तरफ से दरवाजे हैं तथा मुख्य द्वार गढ़नुमा है। जिसके अन्तर्गत चित्रण कार्य अन्दर एवं बाहर दोनां तरफ ही किया गया है और तकनीकि दृष्टि में फ्रेस्को बूनो एवं सेको दोनों ही विधियाँ हैं। चित्रों के विषय सभी प्रकार की भावनाओं से सम्बद्ध रहे हैं। जिनमें मुख्य रासलीला, राजदरबार, ढोला मारु विभिन्न अवतारों के, गोरधान धारण, बरोत का दृश्य, धार्मिक, पौराणिक एवं सामाजिक चित्रण, व्यक्ति चित्रण और व्यापक अलंकरण हुआ है। हवामहल में उपर की मंजिल पर सेठों की दो मुख्य बैठकें बनी हुई हैं जिन्हें रंग चौबारे या रंग के कमरे कहा जाता है में लघुचित्रण एवं बड़े आकार व सभी प्रकार का भित्ति चित्रण है। जिनमें मेहराब, जाली, झरोखे, ताक आदि सम्पूर्ण भागों को बहुत ही आकर्षक एवं स्वर्णिम युक्त रंगों से चित्रित किया गया है। ढोला–मारू, राजदरबार, रासलीला, रामायण, महाभारत, गोवर्धन धारण, छाछ बिलोते हुए, शिव, गणेश, मत्स्य अवतार एवं अन्य विभिन्न अवतारों के साथ छत, टोडे एवं स्तम्भ मेहराब सभी पर सुन्दर व मनोहारी अलंकरण किया गया है। तथा कई प्रमुख चित्रों एवं मुख्य स्थानों पर शीशे की जड़ाई करके चित्रों की सीमा रेखा भी बनाई गई है। विभिन्न उत्सवों जैसे विवाहोत्सव जुलूस एवं व्यक्ति चित्र, पशु–पक्षी का भी व्यापक चित्रण किया गया है

नगर श्री चूरू शोध संस्थान

शोध संस्थान के नाम से जाना जाने वाला यह भवन गिरधारी लाल पोद्दार की हवेली में है। यहाँ के चित्रों का समय लगभग 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ का माना गया है। यहाँ के प्रमुख चित्रों में हाथियों का जुलूस, बरात का दृश्य विवाहोत्सव, अन्य देवी देवताओं का चित्रण है। जिनमें सबसे प्रमुख

चित्र हाथियों का जुलूस बहुत आकर्षक एवं गतिपूर्ण है रेखाएँ व बनावट भी सशक्त एवं सामन्जस्यपर्ण है। रंगों में नीला, गेरु व भूरा आदि भरे गए हैं। एक हाथी के तो 6 सूंडें लगाकर उन्हें अलग–अलग तरीके से दर्शायी गई हैं।

पोद्दारों की हवेली, चूरू

घंटाघर के मुख्य बाजार में स्थित यह विशालकाय हवेली दो भागों में विभाजित है। जिसका मुख्य द्वार पीतल से जड़ा हुआ है, जिसके अन्दर भी सुन्दर अलंकरण एवं रासलील, ऊँट, घोड़े हाथी, राजदरबार, धार्मिक तथा पौराणिक सभी प्रकार के चित्रों का चित्रण फ्रेस्को सेको एवं बूनो दोनों ही विधियों से किया गया है।

चाँद गोठिया की हवेली, रतन नगर

रतन नगर की स्थापना के समय निर्मित यह विशाल हवेली रतन नगर के मध्य में स्थित है। इस हवेली में शुद्ध फ्रेस्कों बूनो व आरास तथा फ्रेस्को सेको विधियों का सुन्दर प्रयोग है, जिसमें विभिन्न विषयों के भित्ति चित्रों का चित्रण मनोहारी ढंग से किया गया है। प्रमुख चित्रों में ज्योतिष का चित्रण रागनी ठोडी का तथा सोहनी महिवाल आदि का चित्रण है। इनके अतिरिक्त कई व्यक्ति चित्र व धार्मिक तथा पौराणिक कथाओं के चित्र अंकित हैं। अलंकरण में यहाँ ज्यामितिय आकारों से सुन्दर अलंकरण किया गया है। आराईश पद्धति में भी पट्टिका चित्रण व अलंकरण किया गया है जिसमें बाहरी रेखा को खुरच कर उकेरा गया है।

राम बल्लभ गाड़ोदिया की हवेली, रतन नगर

इस हवेली में 19वीं शती के भित्ति चित्र मिलते हैं। जिनमें विभिन्न दैवीय अवतार, नवनारी, अश्व एवं गज, हुक्का पीते हुए राजसी महिला व अन्य सामाजिक तथा दरबारी चित्रों की प्रमुखता है। इनके अतिरिक्त, रामगोपाल पोद्दार की हवेली, गौरी शंकर जीवराजका, मिर्जामल घनश्यामदास पौराणिक, जालान, जगदीश प्रसाद कृष्ण कुमार केडिया आदि की ऐसी अनेक हवेलियाँ हैं जो बन्द पड़ी हैं। लेकिन इन सभी पर भी बहुत सुन्दर धार्मिक, राजदरबार, ऊँट, घोड़े, हाथी व अलंकरण आदि का सुन्दर अंकन है। लेकिन बिना सम्भाल और सुरक्षा के धीरे–धीरे धूल धूसरित एवं नष्ट होती जा रही है।

सदासुख पूरणमल दूगड़ की हवेली, तारानगर

व्यासों के मोहल्ले में स्थित इस हवेली में फ्रेस्को सेको एवं बूनो दोनों ही विधियों से भीतर एवं बाहर भित्तिचित्रों का सुन्दर चित्रण है।जिनमेंमुख्य द्वार पर सुन्दर अलंकरण व हाथियों का चित्रण है व विभिनन व्यक्ति चित्र जिनमें राजबरबारी, प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इनके अलावा लक्षमी, गणेश, भैरवादि का भी प्रभावपूर्ण अंकन है।

नन्दलाल बाबू बालचन्द राजबहादूर, मंत्री की हवेली

तारानगर में स्थित यह हवेली मंत्री मार्ग जैन मन्दिर के पास मुख्य बाजार में स्थित है। यह दो मंजिली विशाल हवेली अपनी जर्जर अवस्था में बन्द पड़ी है। जिसकी चित्रण पद्धति फ्रेस्को बूनो एवं सेको दोनों ही है। विषयों के अन्तर्गत देवी देवताओं के विभिन्न अवतार, तांत्रिक, भैरव, दुर्गा, राम–पंचायत, लक्ष्मी, युद्ध अभ्यास, कृष्णलीला रासलीला आदि मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त व्यक्ति चित्र, प्रेम प्रसंग, नरसिंह अवतार, मोटर गाड़ी एवं अनेक पशुओं जिनमें ऊँट, हाथी, घोड़े, गाय के अतिरिक्त अलंकरण आदि का सुन्दर अंकन किया गया है। इस हवेली के पास में ही कालू राम मंत्री की हवेली है। यह भी दो मंजिली है। यहाँ पर वृहत आकार में ऊँट, घोड़े, हाथी एवं बैल गाड़ी की सवारी का बड़े रूपों में चित्रण है। जिसमें हाथी एवं घोड़ों का वास्तविक स्थिति के अनुकूल बनाने की चेष्टा की है जिनमें हिरमच, काला, हरा, एवं नीला रंग प्रयोग में किया गया है। यहाँ के सभी प्रवाह व सामन्जस्यपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त धार्मिक एवं पौराणिक तथा व्यक्तिचित्र व सामाजिक चित्रों के साथ–साथ अलंकरण का भी व्यापक प्रयोग हुआ है।

हवेली सेठ अनोपचन्द बुद्धिचन्द जम्मट, सरदार शहर

यह विशालकाय हवेली है, जिसमें मुख्य द्वार उसके बाद बरामदा है और बरामदे के पश्चात् एक और द्वार है जिस पर शीशे के टुकड़ों की जड़ाई भी की गई है। इस हवेली के बरामदे व बाहर तीन तरफ तीन मंजिल तक सम्पूर्ण हिस्सों को भित्ति चित्रों से सुसज्जित कर रखा है इस हवेली पर भित्ति चित्रण कहीं कहीं दुबारा किया गया है जिसमें प्रारम्भिक भित्ति चित्र तो फ्रेस्को ब्रूनो पद्धति के हैं जिनमें पीछे की तरफ कुश्ती लड़ते हुऐ व पहलवानी करते हुए का अच्छा चित्रण है। इनके अलावा ऊँट, घोड़े तथा विभिन्न प्रकार के धार्मिक चित्र हैं जिनमें रामायण, कृष्णावतार आदि के चित्र बनेहुऐ है।

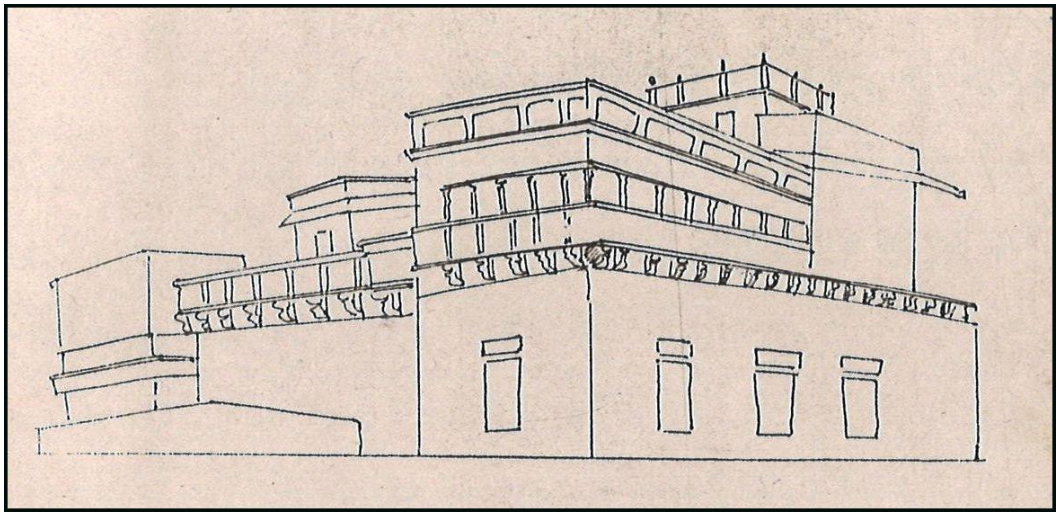

संन्दर्भ –

1. बद्री नारायण वर्मा कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा, पृ.48
2. ममता चतुर्वेदी जयपुर शैली के भित्ति चित्र, पृ.69 अप्रकाशित शोध ग्रन्थ)
3. वही, पृ.70
4. कल्याण, भगवान विष्णु के चौबीस अवतार, जनवरी, 1973, वो. 1
5. Stuart Carywelch - Persian Painting, New York / प्रमोद कुमार सीकर के भित्ति चित्र, P.R.H.C./पद्मश्री कृपाल सिंह केकथनानुसार
6. सगत सिंह राजस्थानी चित्रकला में रागों का स्वरूप, राजस्थान भारती, भाग–11. पृ.147
7. क्लाज एवलिंग रागमाला पेंटिग्स, पृ. 28
8. डॉ. हरमन गोएट्ज– आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर स्टेट, पृ. 19, प्लेट न. 2 और पृ.55 प्लेट न. 4
9. सगत सिंह –राजस्थानी चित्रकला में रागों का स्वरूप राजस्थान भारती, भाग–11. पू.148
10. डॉ. सुमहेन्द्र शर्मा –राजस्थानी चित्रों में रागमाला
11. ममता चतुर्वेदी– जयपुर शैली के भित्ति चित्र, पृ. (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ)
12. बनराज जोशी – चूरू दर्शन, पृ.48
13. विजय शंकर श्रीवास्तव शेखावाटी के भित्ति चित्रों में ऐतिहासिक कथानक एवं सामाजिक प्रथाएं, वरदा, वर्ष 28, अंक 2
14. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक पोद्दार स्मृति पुष्पि ग्रन्थ, पृ.298
15. राजस्थान के इस प्रदेश में विवाहोत्सव के समय अग्नि की वेदी के पास साथ में जो चार छोटी लकड़ियाँ व तख्ती से युक्त बांस बांधा जाताहै उसे धाम कहते हैं।
16. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक – पोद्दार स्मृति पुष्पि ग्रन्थ, पृ. 290
17. डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा – राजस्थानी लोक गाथा का अध्ययन, पृ. 123–24
18. सुबोध अग्रवाल – मरु श्री, वर्ष 15, अंक 2–3
19. कुवर संग्राम सिंह जी के अनुसार
20. उक्त चित्र प्रसिद्ध चित्रकार श्री वेदपाल शर्मा (बन्नू जी) के कथनानुसार इस प्रकार का चित्रण करौली शैली में भी चित्रित किया गय है। बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक – पोद्दार स्मृति पुष्पि ग्रन्थ, पृ. 298
21. डॉ. सत्य प्रकाश – राजस्थानी स्थापत्य सम्बन्धि नित्य प्रयोग के शब्द, रिसर्चर, पृ. 102–3
22. सुबोध अग्रवाल– मरुश्री, वर्ष 14, अंक 2,3